भगत तू चल रे चल | By Sardar Romi |

भगत तू चल रे चल चल रे चल
खाटू के दरबार
वहाँ पे बैठे हैं बैठे हैं
श्याम धनी सरकार
देर है ना अंधेर फैसला सच्चा होता है
जहाँ साँच को आँच नहीं
सदा झूठा रोता है

श्याम की सच्ची ये अदालत है
चलती कोई झूठी ना वकालत है
रिश्वत का कोई यहाँ फेर नहीं
थोड़ी सी देर है अंधेर नहीं
अर्जी लगा ले देर ना कर तू काहे सोता है
जहाँ साँच को आँच नहीं
सदा झूठा रोता है

छोटे बड़े की यहाँ बात नहीं
पूछते जात और ये पात नहीं
धर्म के काँटे में ये तोलते हैं
बंद किस्मत के ताले खोलते हैं
पापी शरण में आके अपने पाप धोता है
जहाँ साँच को आँच नहीं
सदा झूठा रोता है

सोए नसीबे यहाँ जागते हैं
रोग और शोक तन से भागते हैं
करके विश्वास जो भी आते हैं
अर्जी चरणों में जो लगाते हैं
वैसा काटे रोमी जो यहाँ जैसा बोता है
जहाँ साँच को आँच नहीं
सदा झूठा रोता है

भगत तू चल रे चल चल रे चल
खाटू के दरबार
वहाँ पे बैठे हैं बैठे हैं
श्याम धनी सरकार
देर है ना अंधेर फैसला सच्चा होता है
जहाँ साँच को आँच नहीं
सदा झूठा रोता है

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%ad%e0%a4%97%e0%a4%a4-%e0%a4%a4%e0%a5%82-%e0%a4%9a%e0%a4%b2-%e0%a4%b0%e0%a5%87-%e0%a4%9a%e0%a4%b2-by-sardar-romi/